# ब्रोंको चार्ली
# और पोनी एक्सप्रेस


मार्लीन टार्ग ब्रिल

चित्र: क्रेग ऑर्बैक

# ब्रोंको चार्ली और पोनी एक्सप्रेस

मार्लीन टार्ग ब्रिल

चित्र: क्रेग ऑर्बैक

उन लड़कियों और लड़कों के लिए जिन्हें चार्ली की तरह एडवेंचर पसंद है—आप अपने सपनों का पीछा करो। — M. T. B.

मेरे पिताजी गैरी के लिए, जिन्होंने चार्ली की तरह, कैलिफ़ोर्निया तक का अपना सफ़र खुद तय किया —C. S. O.

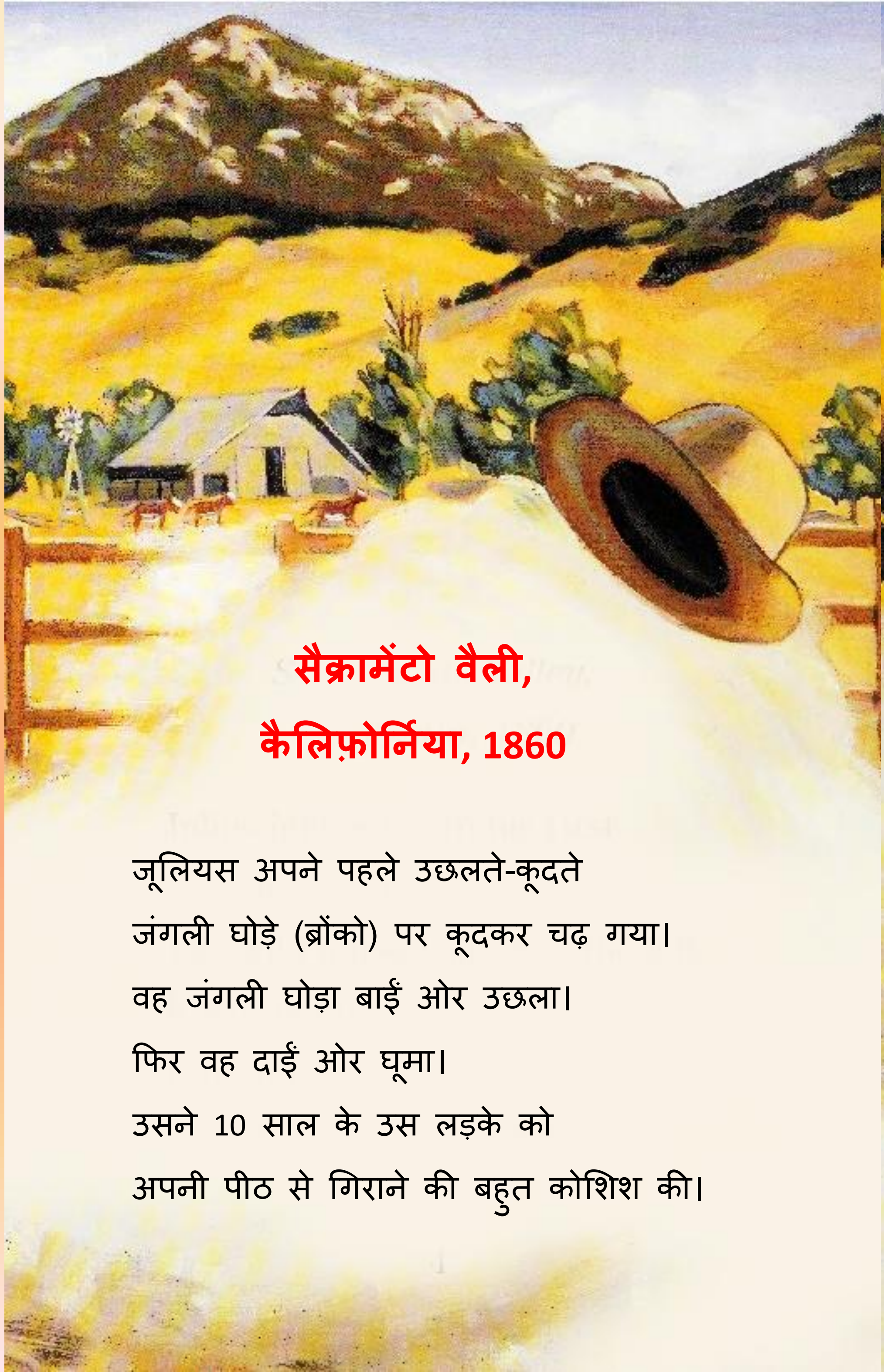

## सैक्रामेंटो वैली,
## कैलिफ़ोर्निया, 1860

जूलियस अपने पहले उछलते-कूदते
जंगली घोड़े (ब्रोंको) पर कूदकर चढ़ गया।
वह जंगली घोड़ा बाईं ओर उछला।
फिर वह दाईं ओर घूमा।
उसने 10 साल के उस लड़के को
अपनी पीठ से गिराने की बहुत कोशिश की।

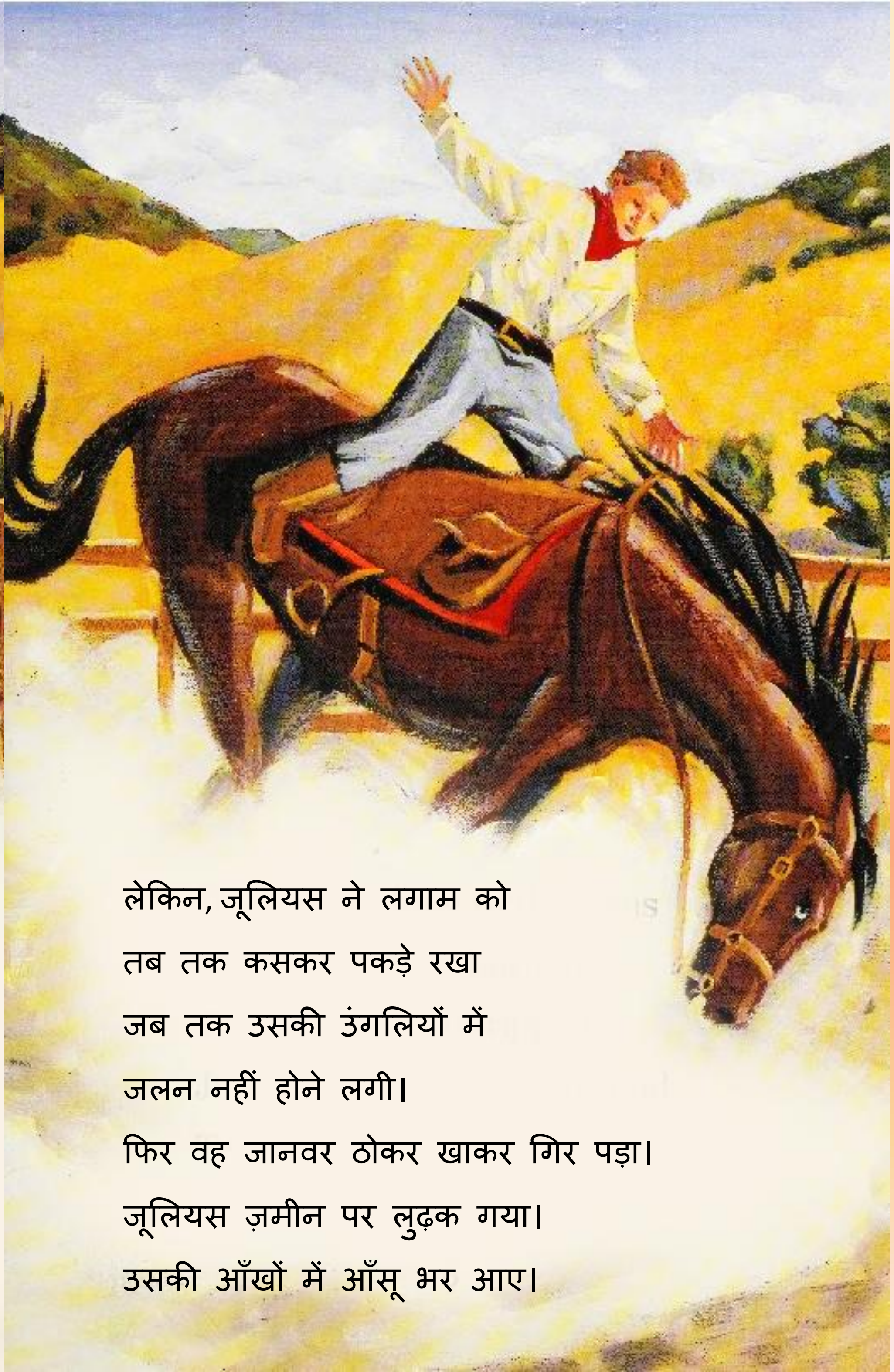

लेकिन, जूलियस ने लगाम को
तब तक कसकर पकड़े रखा
जब तक उसकी उंगलियों में
जलन नहीं होने लगी।
फिर वह जानवर ठोकर खाकर गिर पड़ा।
जूलियस ज़मीन पर लुढ़क गया।
उसकी आँखों में आँसू भर आए।

जूलियस मिलर को घोड़ों से बहुत प्यार था।
सबसे ज़्यादा, वह यह साबित करना चाहता था कि
वह एक काउबॉय बन सकता है।
जब वह नौ साल का था,
तो उसके पिता ने उसे समुद्र में
एक नाविक बनने के लिए भेज दिया था।
लेकिन जूलियस को समुद्र से नफ़रत थी।
वह कैलिफ़ोर्निया में जहाज़ से कूदकर भाग गया।
वहाँ उसकी मुलाक़ात जुआन नाम के एक काउबॉय से हुई,
जो एक मवेशी फ़ार्म (रैंच) में काम करता था।
जुआन, जूलियस को अपने साथ फ़ार्म पर ले गया।
जुआन वहाँ घोड़ों को काबू करने में सबसे माहिर था।
उसने जूलियस को घुड़सवारी करना,
गायों को रस्सी से पकड़ना,
और भालुओं का शिकार करना सिखाया।
वह जूलियस को यह सिखा रहा था
कि एक जंगली घोड़े को कैसे काबू किया जाता है।
अगर जूलियस इस घोड़े को काबू कर लेता,
तो वह जानवर उसका हो जाता।

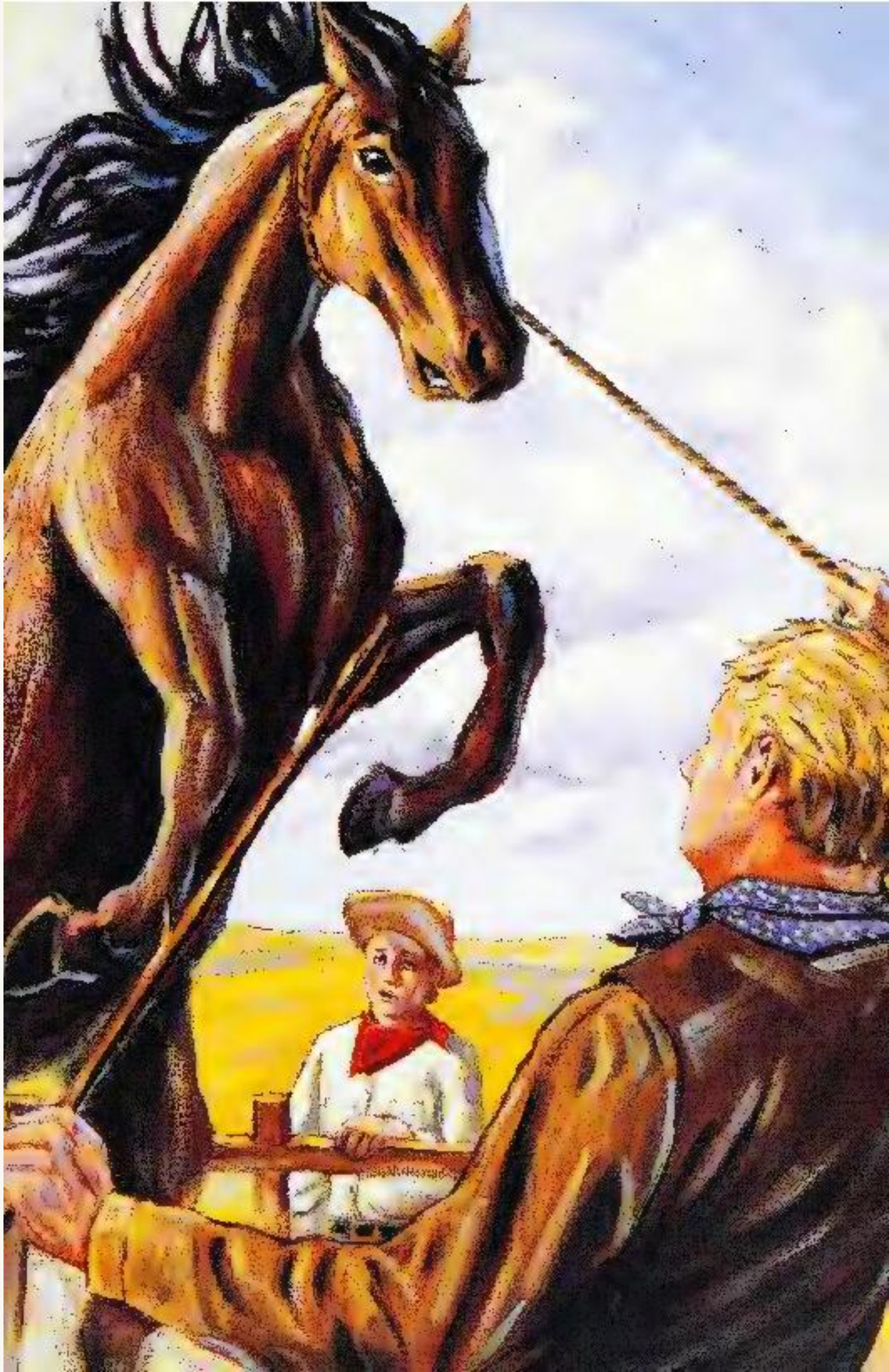

काउबॉय लोगों के हँसने की आवाज़ सुनकर
जूलियस ने अपने आँसू रोक लिए।
उन्हें लगा कि जूलियस इतना छोटा है कि
इतने बड़े और जंगली घोड़े को काबू नहीं कर पाएगा।
लेकिन जूलियस ने उन्हें गलत साबित कर दिया।
जूलियस फिर से उस जंगली घोड़े पर चढ़ गया
और उस पर टिका रहा।
उसके बाद, वहाँ मौजूद लोग उसे
'ब्रोंको चार्ली' कहकर बुलाने लगे।
और यही नाम उसकी पहचान बन गया।

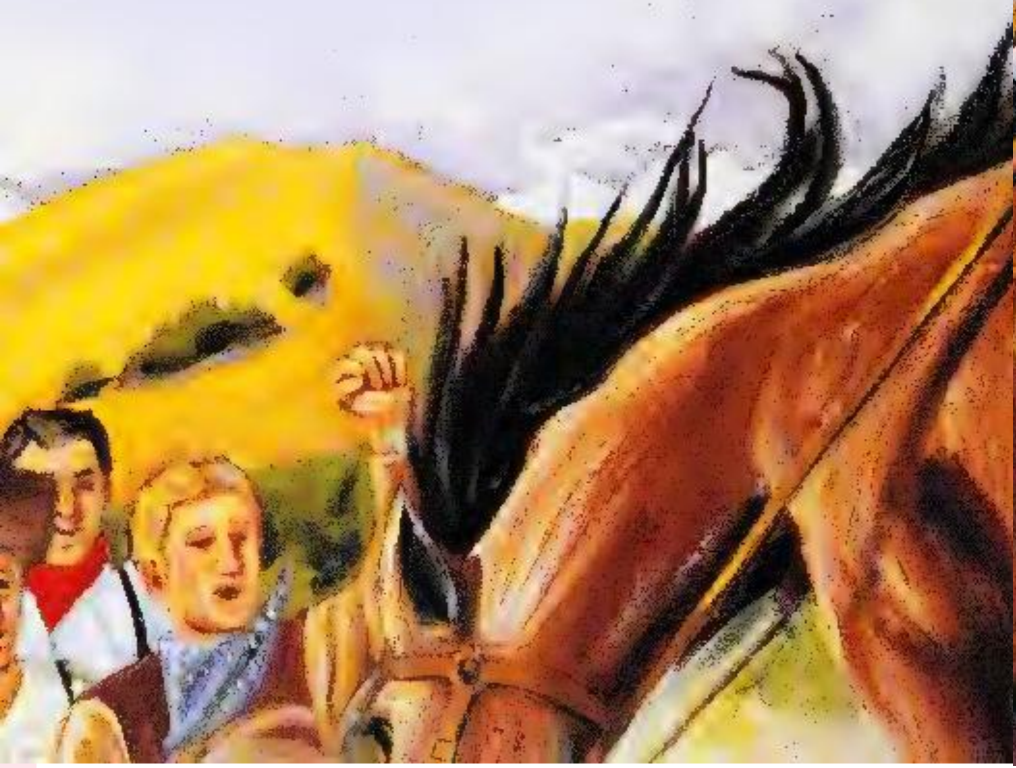
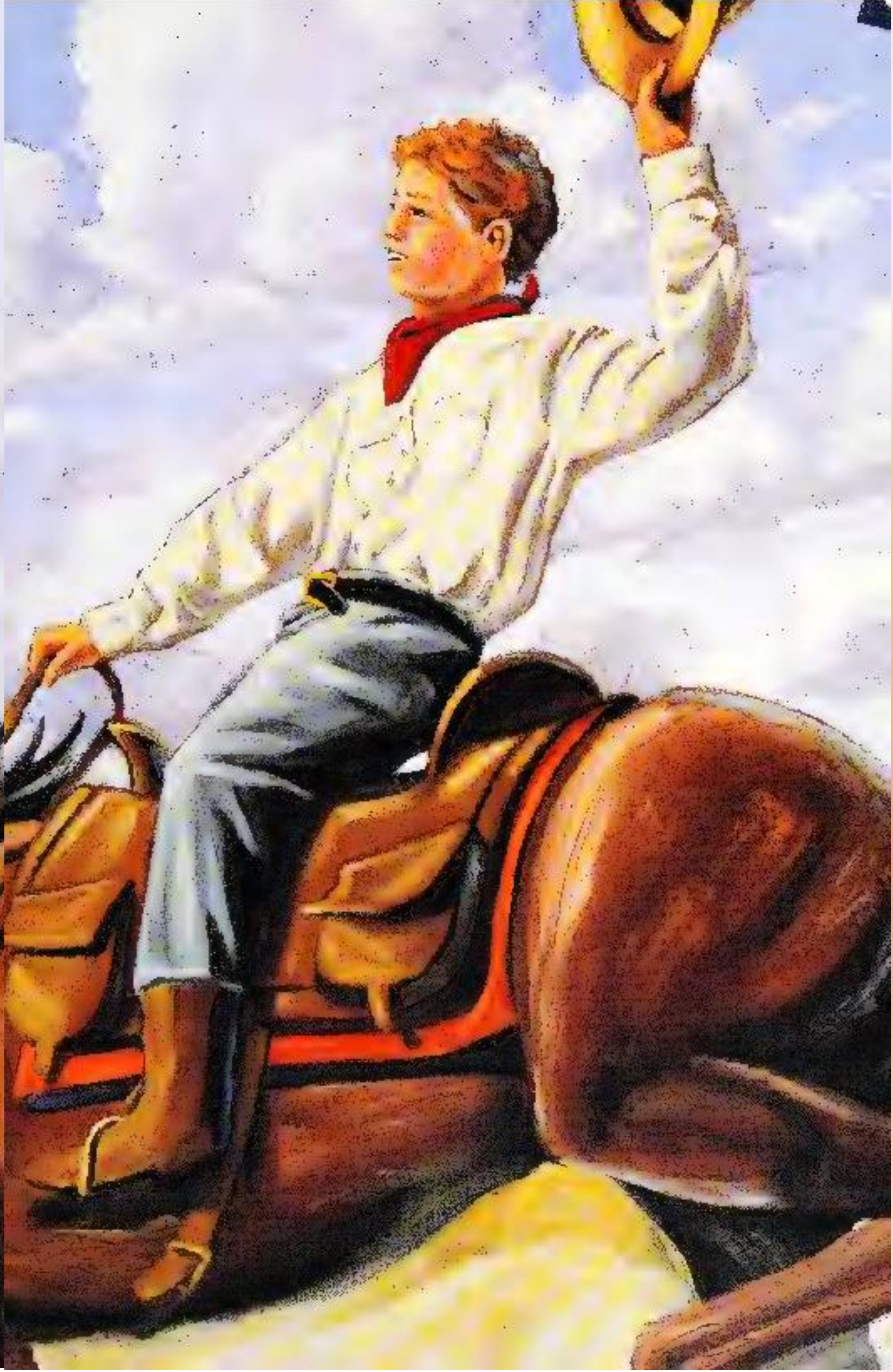

ब्रोंको चार्ली ने उस पहले घोड़े को काबू किया
और उसके बाद कई और घोड़ों को भी।
एक साल बाद, उसे फिर से
किसी नए एडवेंचर की तलाश होने लगी।
एक रात, एक फटे-पुराने कपड़ों वाला बूढ़ा काउबॉय
उनके कैंप में आ पहुँचा।
उसने 'पोनी एक्सप्रेस' के बारे में अपनी कहानियों से
चार्ली को पूरी तरह से मंत्रमुग्ध कर दिया।
'पोनी एक्सप्रेस' के घुड़सवारों ने
लोगों तक खबरें और समाचार पहुँचने का
तरीका ही बदल दिया था।
1861 में, मिसौरी और कैलिफ़ोर्निया के बीच
न तो कोई रेलमार्ग था और न ही कोई अच्छी सड़कें।
इसलिए, कैलिफ़ोर्निया के दूर-दराज बसे शहर
बाकी देश से पूरी तरह कटे हुए थे।

'पोनी एक्सप्रेस' के घुड़सवार रेगिस्तान,
पथरीले पहाड़ों और इंडियन इलाकों
से होकर गुज़रते थे।
वे पूरी रात घुड़सवारी करते थे,
और हर 15 मील की दूरी पर बने
स्टेशनों पर अपने घोड़े बदलते थे।
उन्होंने समय पर पहुँचने की कसम खाई हुई थी।

'पोनी एक्सप्रेस' के घुड़सवार 2,000 मील की दूरी
सिर्फ़ 10 दिनों में तय करके डाक पहुँचाते थे।
यह स्टेजकोच (घोड़ागाड़ियों) के मुकाबले 20 दिन तेज़ था,
और नावों के मुकाबले 100 दिन ज़्यादा तेज़!
एक पुराने काउबॉय ने बताया कि 'पोनी एक्सप्रेस' सेवा में
चार्ली से थोड़ी ज़्यादा उम्र के घुड़सवारों को रखा जाता था।
चार्ली का सपना था कि वह भी
'पोनी एक्सप्रेस' का हिस्सा बने।
जैसे ही उसे अगला मौका मिला,
वह तुरंत रेंच (मवेशी खेत) से निकल पड़ा।
वह अपनी आँखों से
'पोनी एक्सप्रेस' को देखना चाहता था।

## सैक्रामेंटो, कैलिफ़ोर्निया, 1861

चार्ली सैक्रामेंटो के चहल-पहल वाले माइनिंग शहर में गया।
वहाँ पश्चिम के सबसे बड़े पोनी एक्सप्रेस स्टेशनों में से एक था।
चार्ली धूल भरी सड़क पर स्टेशन तक गया।
जैसे-जैसे वह पास पहुँचा, उसने अपने पीछे सरपट दौड़ते खुरों की आवाज़ सुनी।

उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था।
क्या वह 'पोनी एक्सप्रेस' का सवार बन पाएगा?
चार्ली मुड़ा।
उसे बस एक घोड़ा दिखा जिसपर एक मेलबैग और खाली काठी लदी थी।

बिना सवार वाले घोड़े को देखने के लिए लोग
सड़क पर उमड़ पड़े।
यह पक्का पोनी एक्सप्रेस का घोड़ा था।
लेकिन किसी को नहीं पता था
कि सवार के साथ क्या हुआ था।
"अब आप क्या करने वाले हैं?"
एक औरत ने स्टेशनमास्टर से पूछा।
"इस बार डाक देर से आएगी,"
उसने जवाब दिया।
"हमें अगले सवार का इंतज़ार करना होगा।”

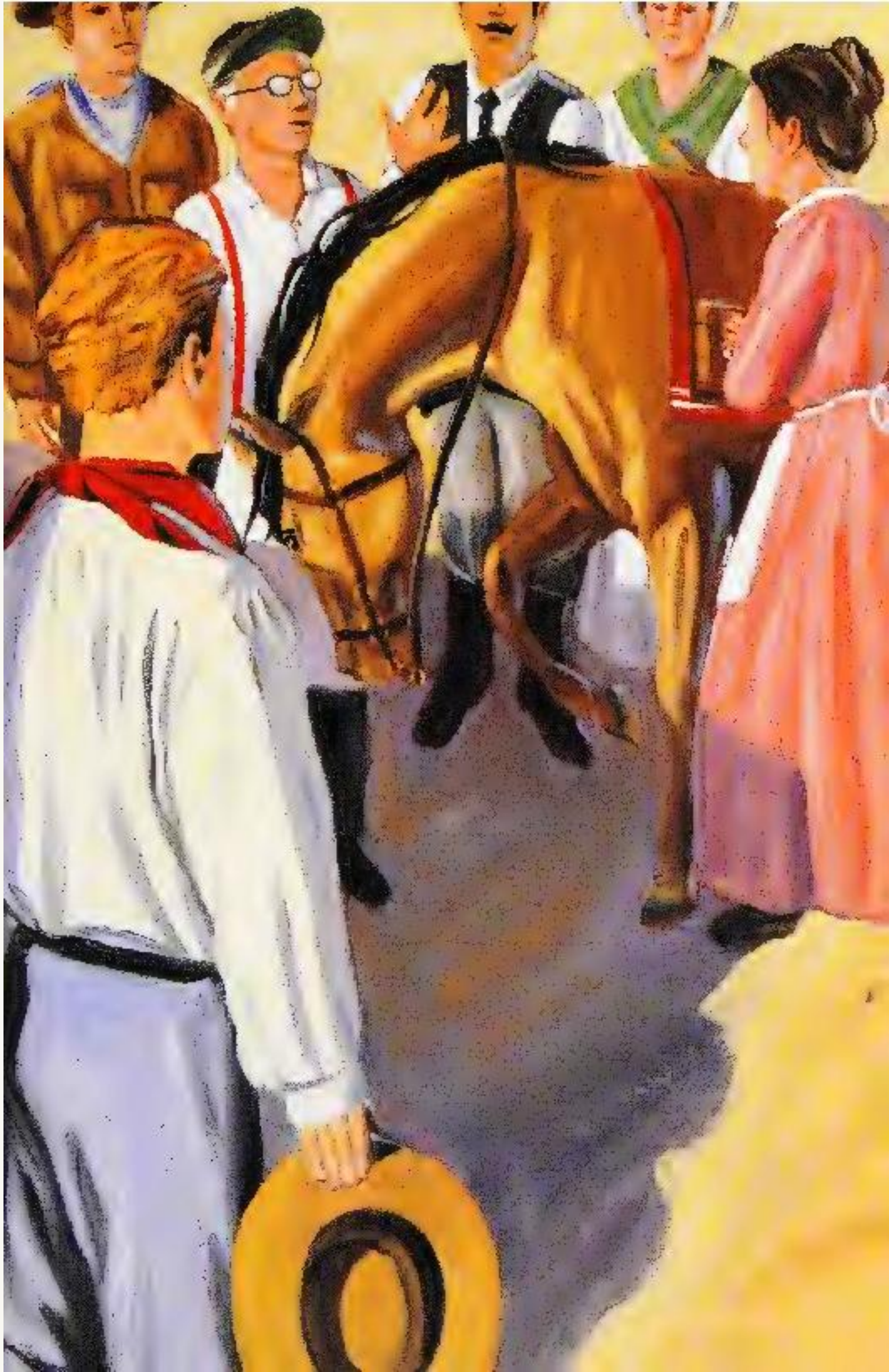

सब चुप हो गए,
चार्ली ने उनके परेशान चेहरों को देखा।
उसे लापता राइडर के लिए डर दिखा
लेकिन उसे ईस्ट की खबरों की भूख भी दिखी।
अगले शहर के लोग भी इसके लिए भूखे होंगे।
उस बसंत में, नॉर्थ और साउथ के राज्यों के बीच
युद्ध छिड़ गया था।
ज़्यादातर कैलिफ़ोर्निया के लोगों के परिवार
उन राज्यों में थे।
चार्ली भीड़ के आगे बढ़ा।
"मैं घुड़सवारी कर सकता हूँ," उसने कहा।
सबकी नज़रें उसकी तरफ़ मुड़ गईं।

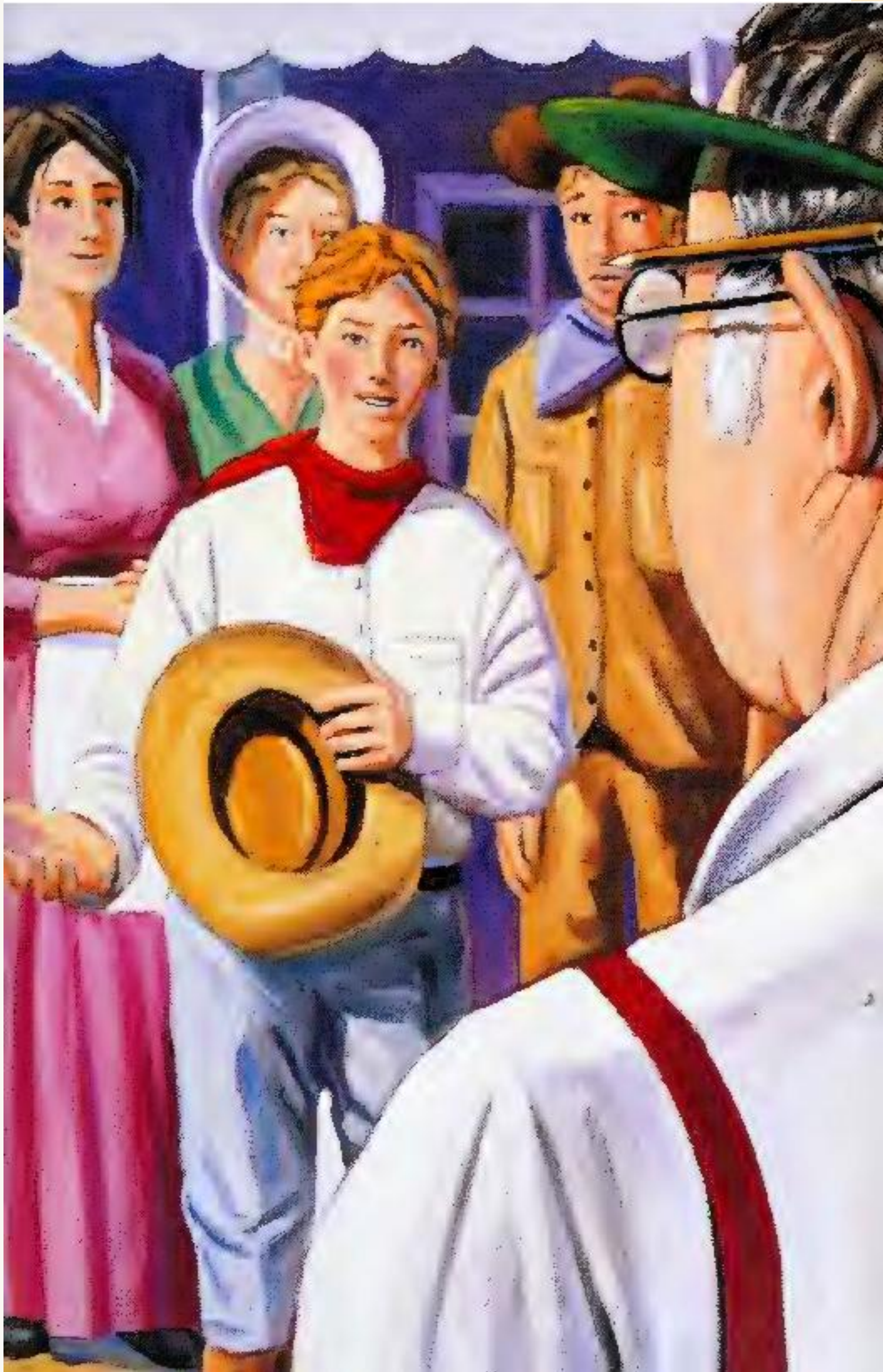

कुछ आदमियों ने कहा कि चार्ली
बहुत छोटा लग रहा था।
पोनी एक्सप्रेस राइडर्स तेज़,
ज़िद्दी घोड़ों को संभालते थे।
राइडर्स को भालू, भेड़िये,
और रैटलस्नेक (सांपों)
का सामना करना पड़ता था।
और उन्हें दुश्मन
इंडियंस से दूर रहना पड़ता था।

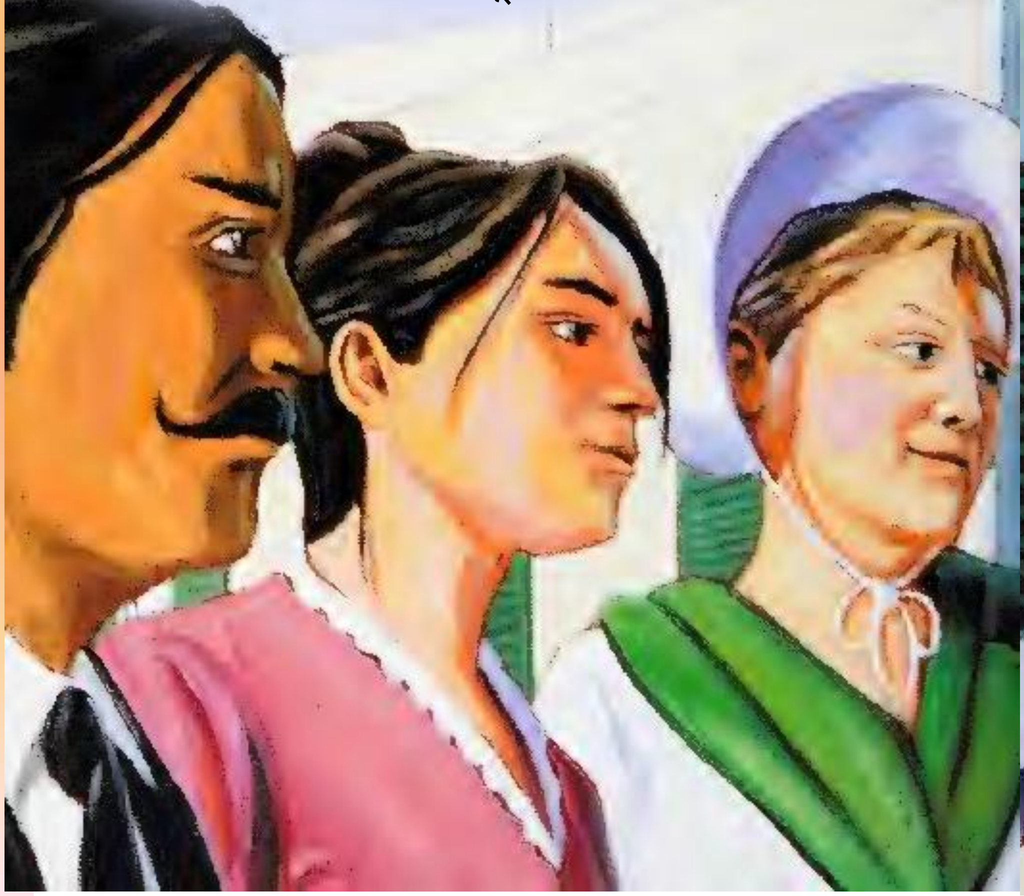

गोरे लोग कई सालों से
इंडियन लोगों की ज़मीन हड़प रहे थे।
कुछ इंडियंस ने
यात्रियों पर हमला करके जवाब दिया।
"अगर तुम मुझे घुड़सवारी का मौका दोगे, तो मैं तुम्हें
दिखाऊँगा कि मैं क्या कर सकता हूँ," चार्ली ने कहा।

इससे पहले कि कोई जवाब दे पाता,
चार्ली ने अपना घोड़ा एक अजनबी को दे दिया।
फिर वह इंतज़ार कर रहे पोनी एक्सप्रेस
घोड़े की काठी पर बैठ गया।
स्टेशनमास्टर ने चारों ओर देखा।
उसके पास क्या चारा था?
उसने चार्ली को हॉर्न दिया।

स्टेशनमास्टर ने कहा कि अगला स्टेशन
प्लेसरविले में है,
लगभग 50 मील दूर।
चार्ली को स्टेशन के पास पहुँचने पर हॉर्न बजाना था।
इस आवाज़ से वहाँ के आदमियों को पता चल जाता
कि दूसरे सवार के लिए एक नया घोड़ा तैयार कर लो।
फिर स्टेशनमास्टर ने चार्ली से
हाथ मिलाया और घोड़े की पीठ को थपथपाया।

चार्ली चला गया!

वह एक कच्ची सड़क पर चलता रहा

जब तक वह पहाड़ों तक नहीं पहुँच गया।

जल्द ही शहर गायब हो गया।

चार्ली के चेहरे पर एक बड़ी मुस्कान फैल गई।

इस एक दिन के लिए,

वह एक सच्चा ‘पोनी एक्सप्रेस’ सवार था।

चार्ली इतना खुश महसूस कर रहा था

उसे लगा कि उसके बटन फट जाएँगे।

लेकिन वह सवारी जानता था आसान नहीं होगी।

प्लेसरविले का रास्ता ढूंढने में उसकी मदद करने के लिए

कोई सड़क या निशान नहीं थे।

वह एक ऐसे घोड़े पर था जिस पर उसने

पहले कभी सवारी नहीं की थी।

और उसे खड़ी पहाड़ी दर्रों पर

ऊपर-नीचे सफर करना था।

चट्टानी ढलानों पर चढ़ते हुए
घोड़ा पहले ही फिसल गया था,
चार्ली ने घोड़े को संभालने के लिए थपथपाया।
जैसे ही वे एक मोड़ से गुज़रे,
हवा तेज़ हो गई।
बारिश की बूंदें चार्ली के चेहरे पर पड़ने लगीं।
कुछ ही देर में, मूसलाधार बारिश ने
उसके कपड़े पूरी तरह भिगो दिए।
चार्ली ने मुलायम चमड़े के
डाक वाले थैले को संभाला।
तेल लगे रेशमी कपड़े से उसकी जेबें बंद थीं।
वह जानता था कि अंदर रखे खत
सूखे ही रहेंगे।

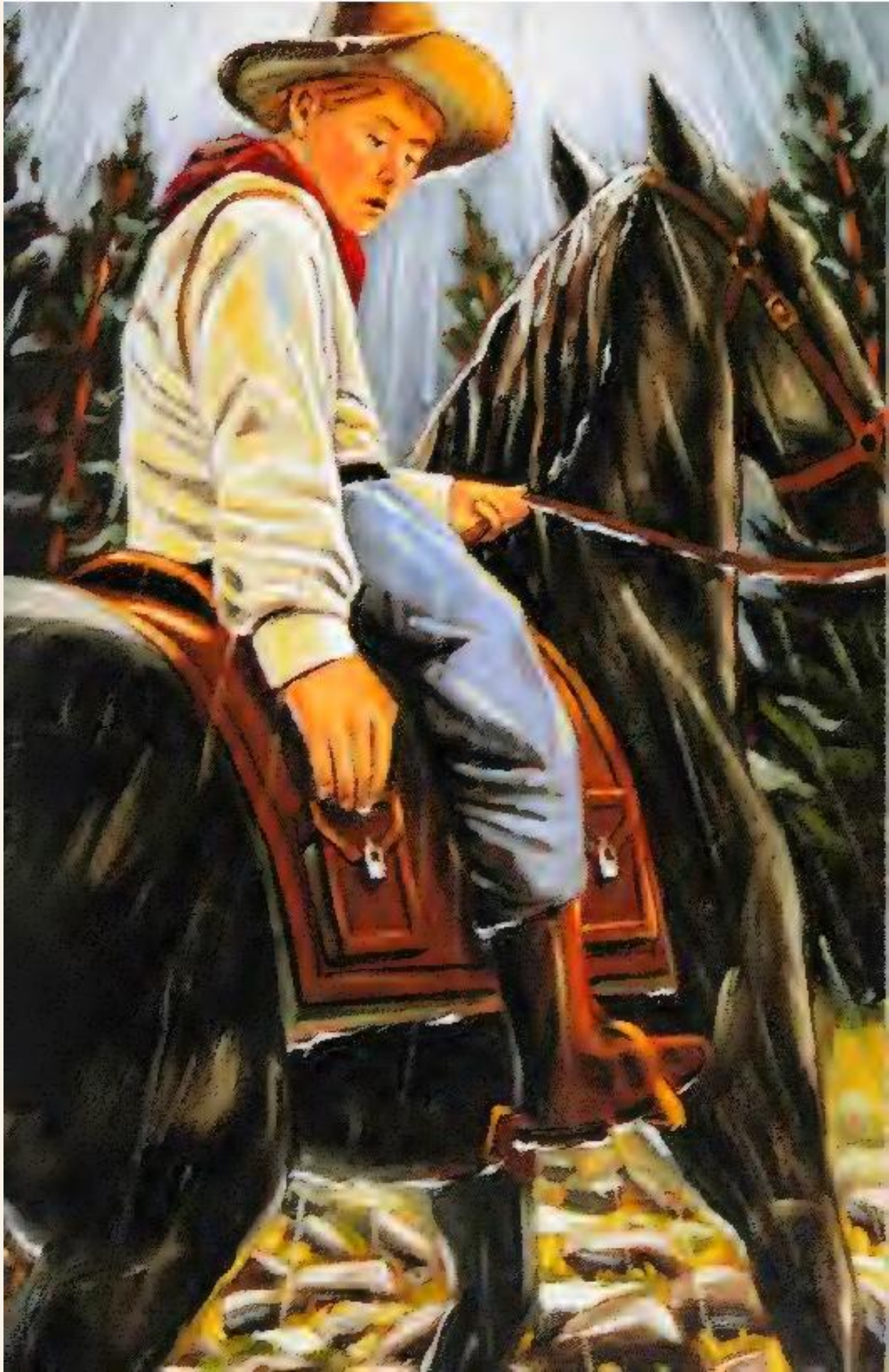

घंटों तक बारिश होती रही।
रास्ता कीचड़ से लथपथ होकर
फिसलन भरा हो गया।
एक मोड़ पर, घोड़े का पैर
एक छोटे से गड्ढे में पड़ गया,
चार्ली नीचे उतरकर उसका पैर देखने लगा।
उसे कोई हड्डी टूटी हुई महसूस नहीं हुई।
लेकिन घोड़ा लंगड़ा रहा था।
चार्ली थोड़ी देर तक उसे पैदल चलाता रहा।
फिर वह दोबारा घोड़े पर चढ़ गया।
उसे प्लेसरविले पहुँचना ही था,
कुछ लोगों ने उस पर भरोसा किया था।

जैसे ही वे एक और मोड़ से गुज़रे,
बारिश रुक गई।
दोपहर ढलने के बाद का सूरज दिखाई दिया।
कुछ देर के लिए, एक पीली चमक ने
पहाड़ की ढलान को रोशन कर दिया।
फिर चारों ओर अंधेरा छा गया।
चार्ली कांप उठा।
उसने अपनी भीगी हुई कमीज़ को
और कसकर लपेट लिया।

वह पहले कभी रात में
पहाड़ों में अकेला नहीं रहा था।
उसके साथ हमेशा गाने गाते हुए चरवाहे
या मवेशियों का झुंड होता था, जो उसका साथ देते थे।
अब अंधेरे में उसे हर जानवर की आवाज़
और हर टूटती टहनी की खड़खड़ाहट
ज़्यादा तेज़ सुनाई दे रही थी।
चार्ली को उस घुड़सवार की याद आई
जिसकी जगह उसने ली थी।
उसके साथ क्या हुआ होगा? क्या वह इंडियंस थे?
भेड़िये? या कोई अन्य बुरी चीज़?

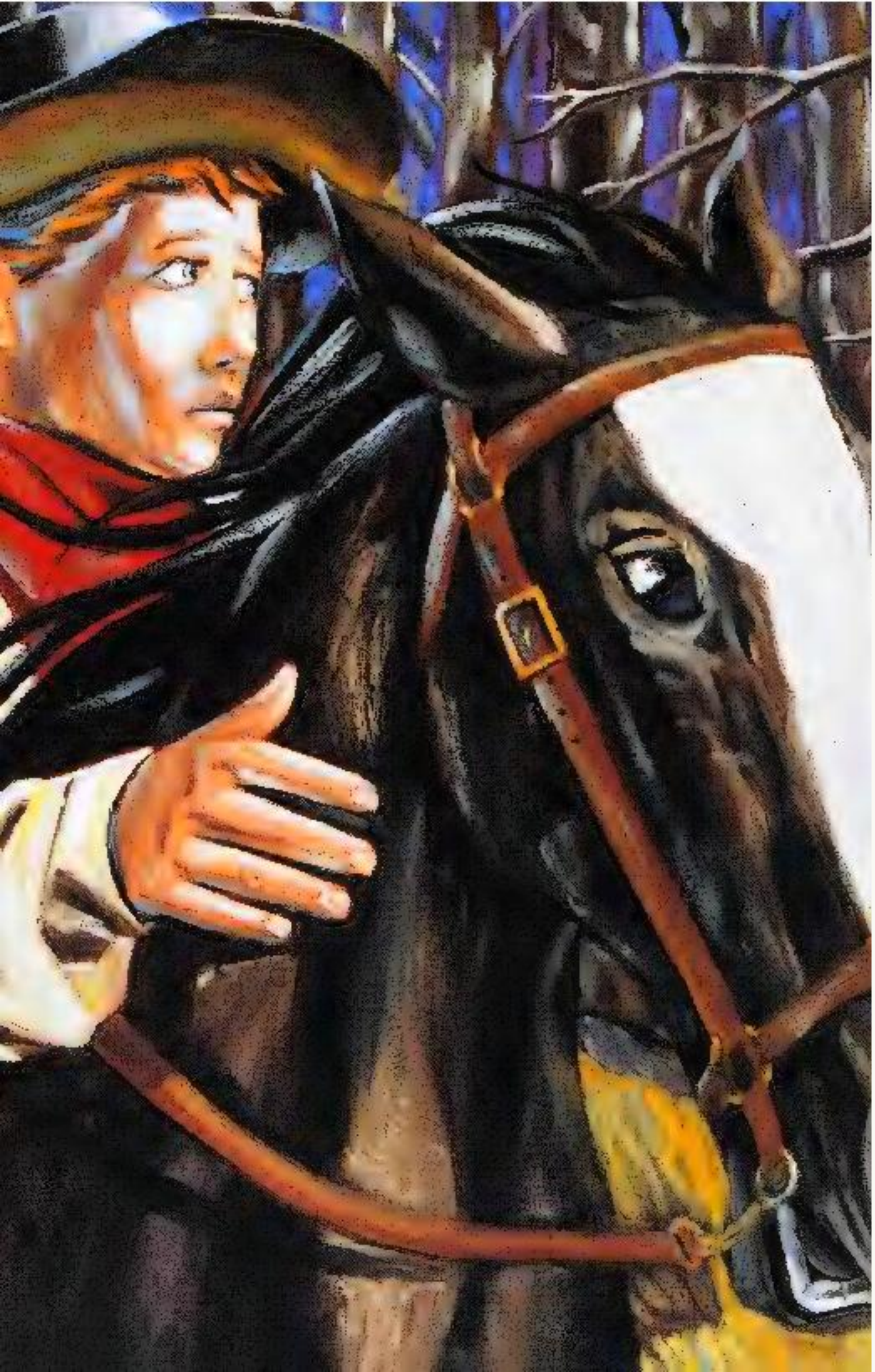

जैसे ही बादल छँटे,
चाँद निकल आया।
शुरुआत में, चार्ली को चाँद की रोशनी अच्छी लगी।
फिर चाँद की परछाइयाँ
उसे भ्रमित करने लगीं।
जानवर और पक्षी उसे राक्षसों जैसे दिखने लगे।
पेड़ों की डालियाँ उसे पकड़ने के लिए
बढ़ती हुई बाहों जैसी लगीं।
अचानक, घोड़ा डर के मारे उछल पड़ा और
तेज़ी से घूमा,
चार्ली ने उस डरे हुए जानवर को
शांत करने की कोशिश की।
लेकिन अपनी आँख के कोने से,
उसने पेड़ों के बीच किसी को छिपा हुआ देखा।
उस आदमी ने एक बहुत बड़ा डंडा ऊपर उठाया।
क्या वह कोई इंडियन था?

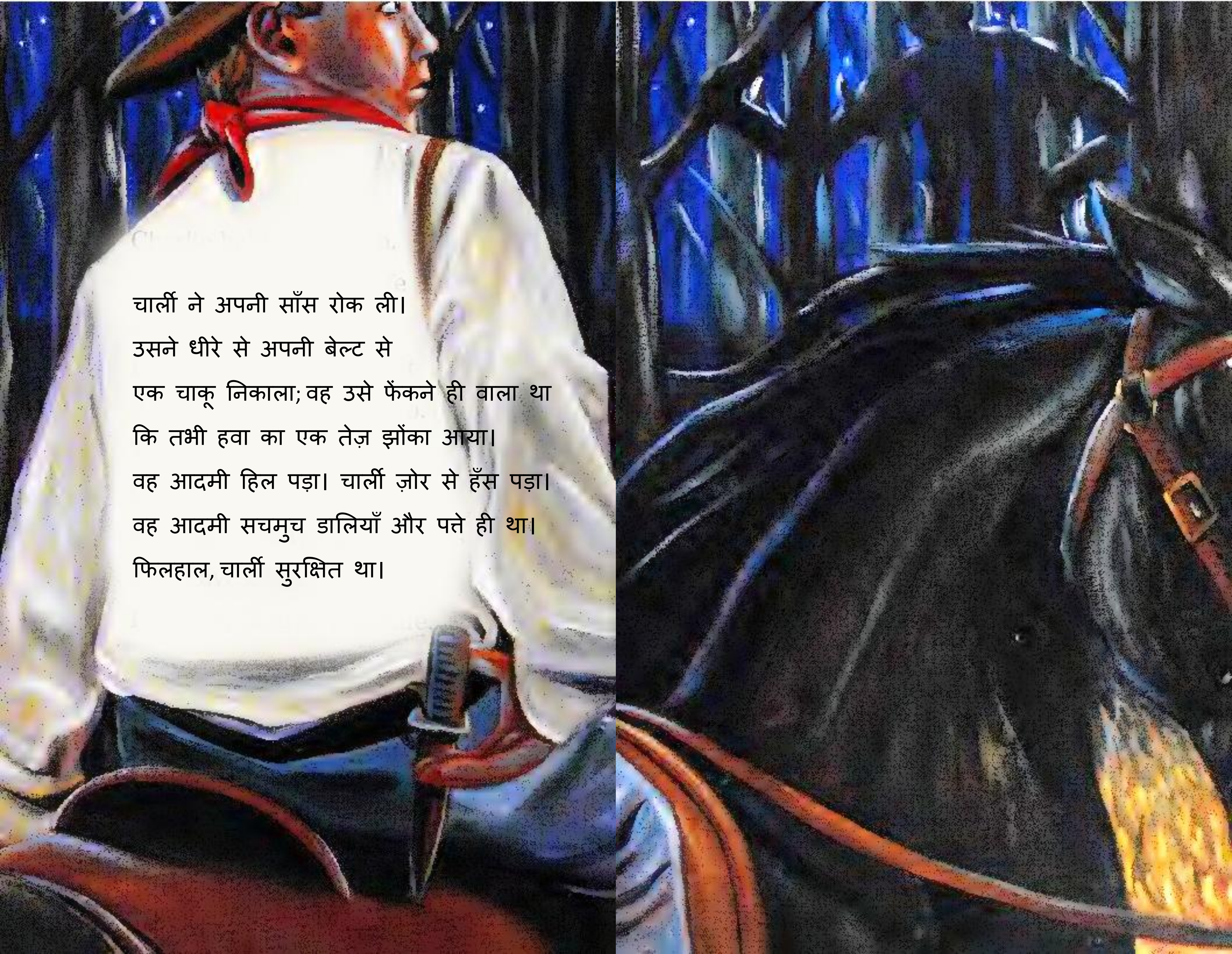

चार्ली ने अपनी साँस रोक ली।

उसने धीरे से अपनी बेल्ट से

एक चाकू निकाला; वह उसे फेंकने ही वाला था

कि तभी हवा का एक तेज़ झोंका आया।

वह आदमी हिल पड़ा। चार्ली ज़ोर से हँस पड़ा।

वह आदमी सचमुच डालियाँ और पत्ते ही था।

फिलहाल, चार्ली सुरक्षित था।

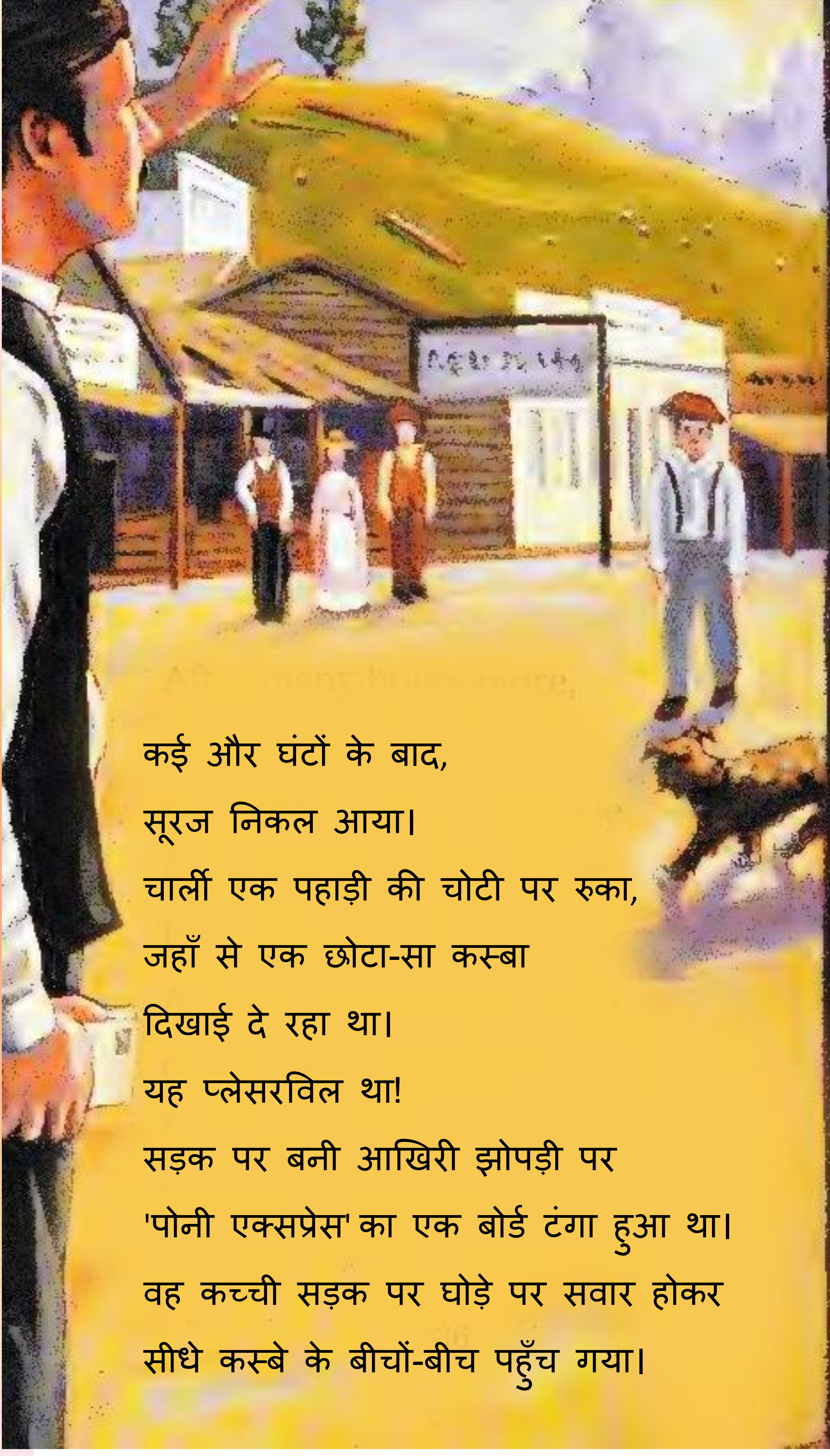

कई और घंटों के बाद,
सूरज निकल आया।
चार्ली एक पहाड़ी की चोटी पर रुका,
जहाँ से एक छोटा-सा कस्बा
दिखाई दे रहा था।
यह प्लेसरविल था!
सड़क पर बनी आखिरी झोपड़ी पर
'पोनी एक्सप्रेस' का एक बोर्ड टंगा हुआ था।
वह कच्ची सड़क पर घोड़े पर सवार होकर
सीधे कस्बे के बीचों-बीच पहुँच गया।

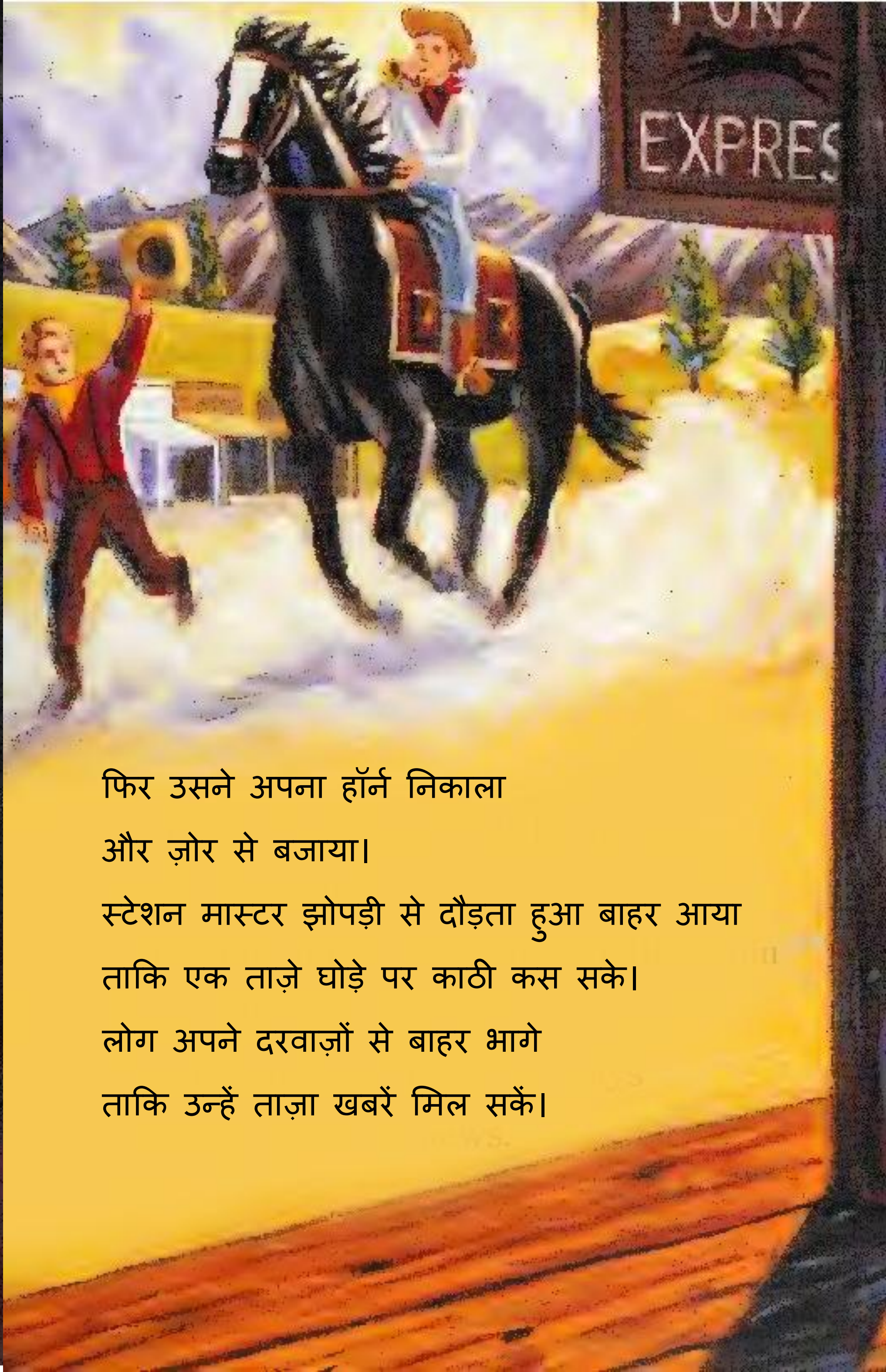


फिर उसने अपना हॉर्न निकाला
और ज़ोर से बजाया।
स्टेशन मास्टर झोपड़ी से दौड़ता हुआ बाहर आया
ताकि एक ताज़े घोड़े पर काठी कस सके।
लोग अपने दरवाज़ों से बाहर भागे
ताकि उन्हें ताज़ा खबरें मिल सकें।

स्टेशन मास्टर ने चार्ली के मेल बैग से
प्लेसरविल के लिए आए खत निकाल लिए।
फिर उसने बैग में बाकी मेल ठूंस दिया
और उसे दोबारा सील कर दिया।
एक नया घुड़सवार बैग लेकर लपका
और ताज़े घोड़े पर कूदकर सवार हो गया।
स्टेशन मास्टर चार्ली की तरफ मुड़ा।
उसने पहले कभी इतना कम उम्र का
'पोनी एक्सप्रेस' घुड़सवार नहीं देखा था।
उसने चार्ली से पूछा कि
वह घुड़सवारी करने यहाँ कैसे पहुँचा।
चार्ली ने अपनी तरफ से जितना हो सका, उतना समझाया।
लेकिन वह इतना थका हुआ था
कि ज़्यादा बोल नहीं पा रहा था।
उस आदमी ने उसे एक बिस्तर दिखाया
जहाँ वह सो सकता था।
उसने बताया कि अगली रात एक स्टेजकोच उसे
वापस सैक्रामेंटो ले जाएगी।
चार्ली ने मन ही मन सोचा कि काश, वह इसके बजाय
'पोनी एक्सप्रेस' के लिए ही घुड़सवारी कर पाता।

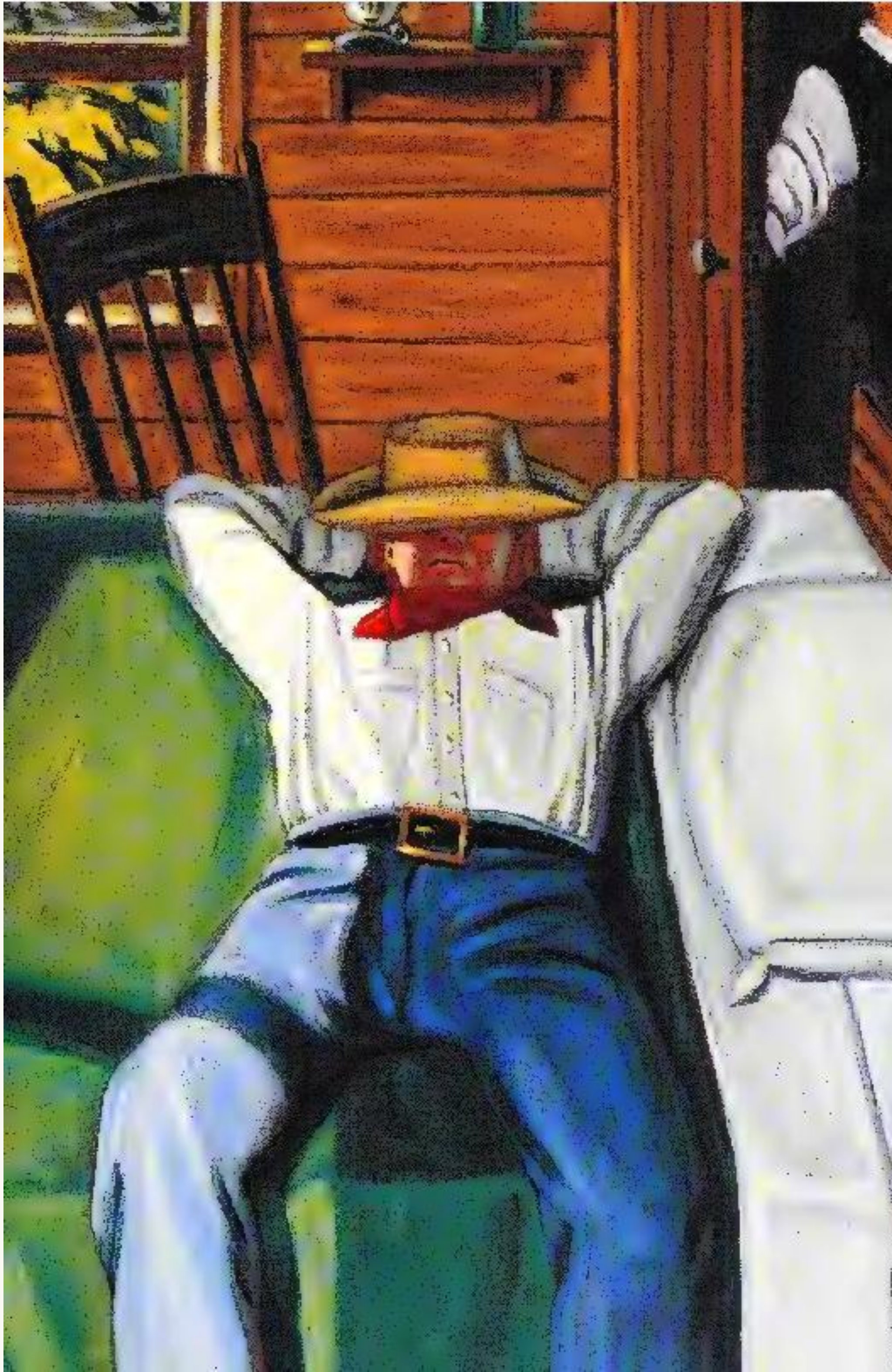

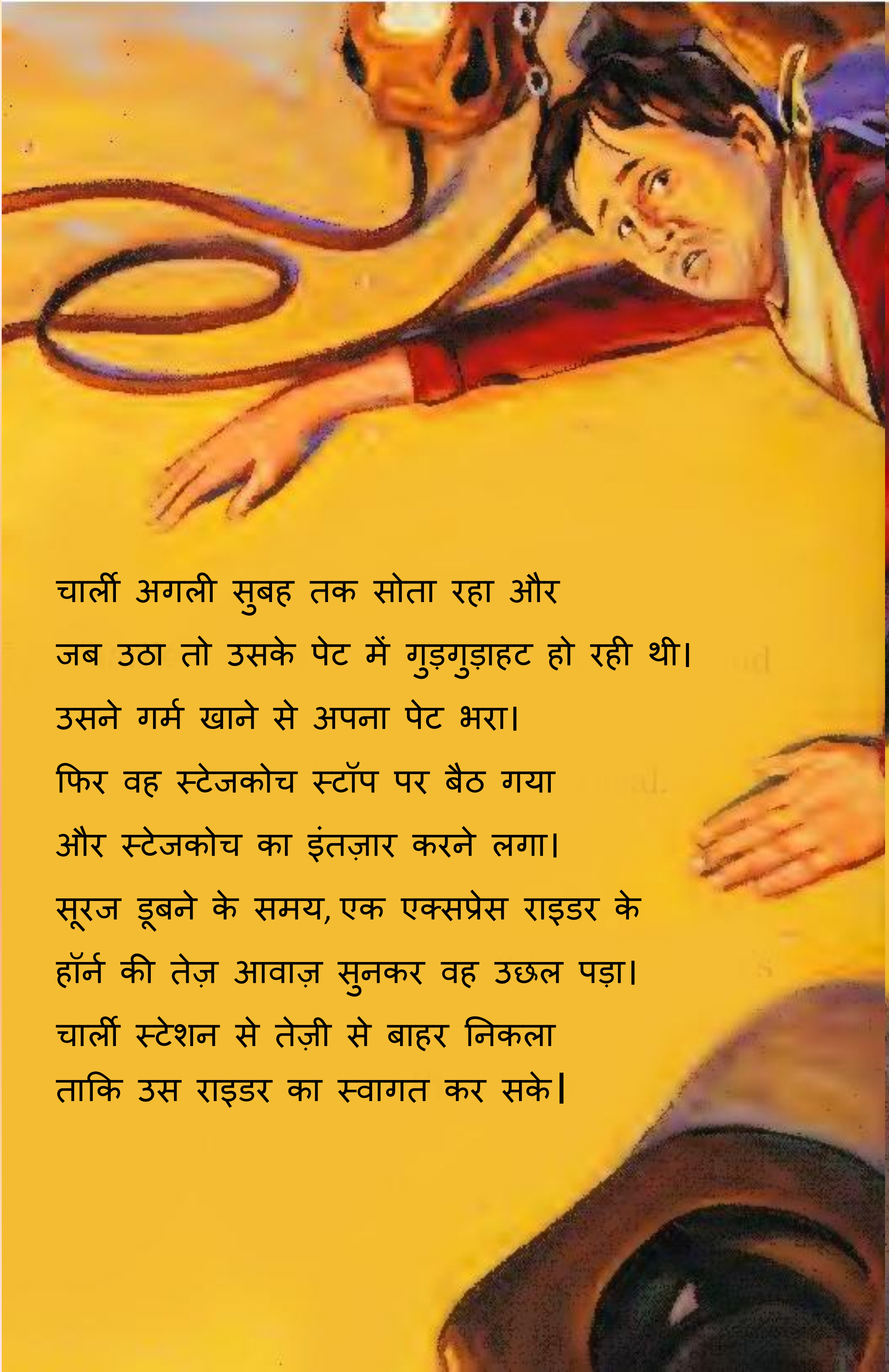

चार्ली अगली सुबह तक सोता रहा और

जब उठा तो उसके पेट में गुड़गुड़ाहट हो रही थी।

उसने गर्म खाने से अपना पेट भरा।

फिर वह स्टेजकोच स्टॉप पर बैठ गया

और स्टेजकोच का इंतज़ार करने लगा।

सूरज डूबने के समय, एक एक्सप्रेस राइडर के

हॉर्न की तेज़ आवाज़ सुनकर वह उछल पड़ा।

चार्ली स्टेशन से तेज़ी से बाहर निकला

ताकि उस राइडर का स्वागत कर सके।

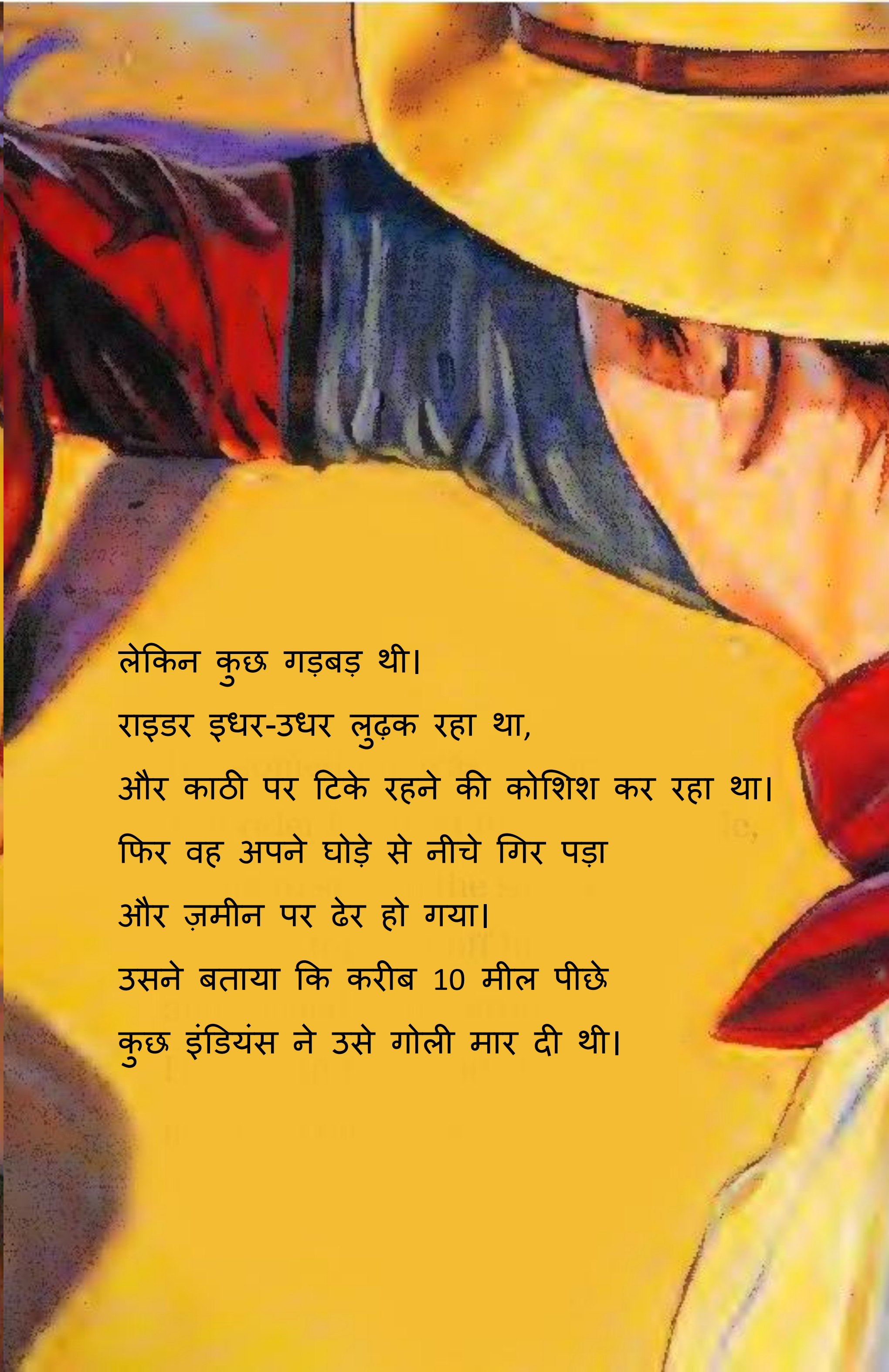

लेकिन कुछ गड़बड़ थी।

राइडर इधर-उधर लुढ़क रहा था,

और काठी पर टिके रहने की कोशिश कर रहा था।

फिर वह अपने घोड़े से नीचे गिर पड़ा

और ज़मीन पर ढेर हो गया।

उसने बताया कि करीब 10 मील पीछे

कुछ इंडियंस ने उसे गोली मार दी थी।

चार्ली जानता था कि वह आदमी
अब डाक नहीं पहुँचा पाएगा।
इसलिए, चार्ली ने डाक का थैला उठाया।
वह एक ताज़े-दम घोड़े पर चढ़ गया।
और उसने घोड़े का मुँह सैक्रामेंटो की तरफ मोड़ दिया,
किसी ने भी उसे रोकने की कोशिश नहीं की।
स्टेशनमास्टर जानता था कि वह
किसी भी 'पोनी एक्सप्रेस' राइडर जितनी ही
तेज़ी से घुड़सवारी कर सकता है।

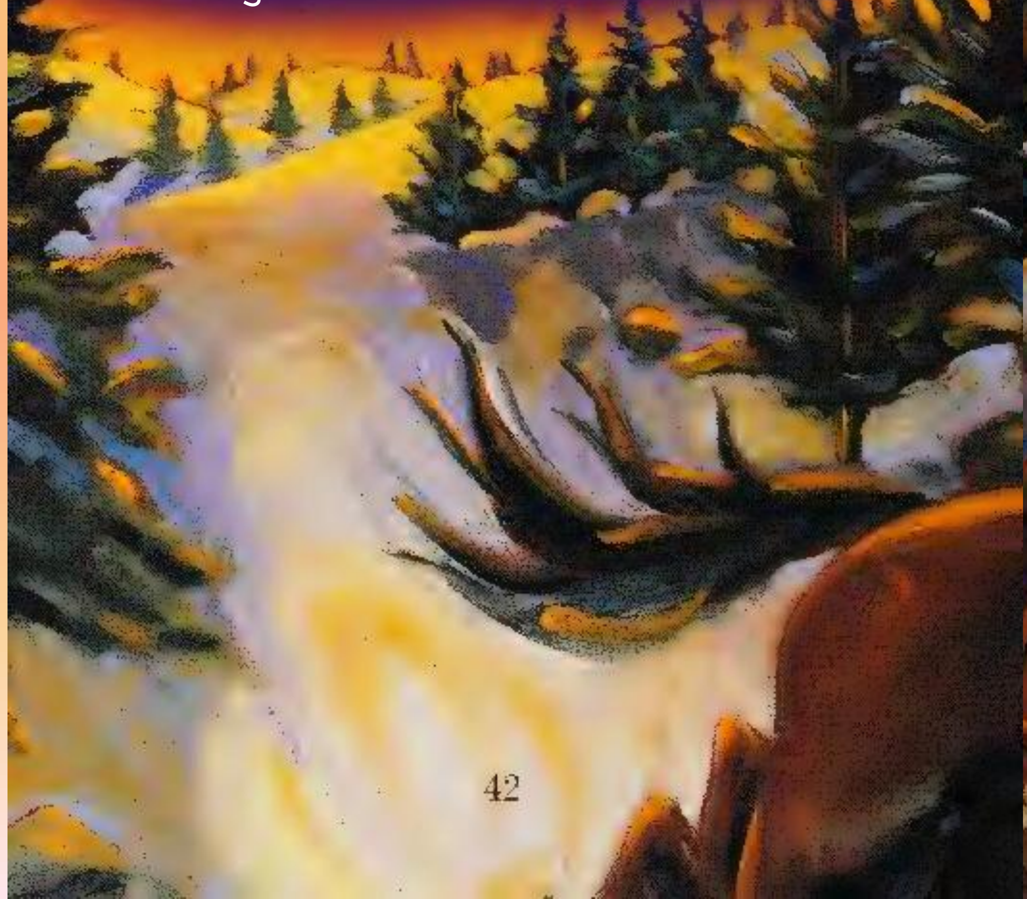



इस बार, सफ़र ज़्यादा आसानी से कटा।
चार्ली को वापस जाने का रास्ता याद था।
वह पहाड़ों के जानवरों और पक्षियों की
आवाज़ों को पहचानता था।
पेड़ों और चट्टानों से पड़ने वाली
चाँदनी की परछाइयों को देखकर वह हँसता रहा।
उसे ऐसा महसूस हो रहा था, जैसे वह
सालों से डाक पहुँचाने का काम कर रहा हो।

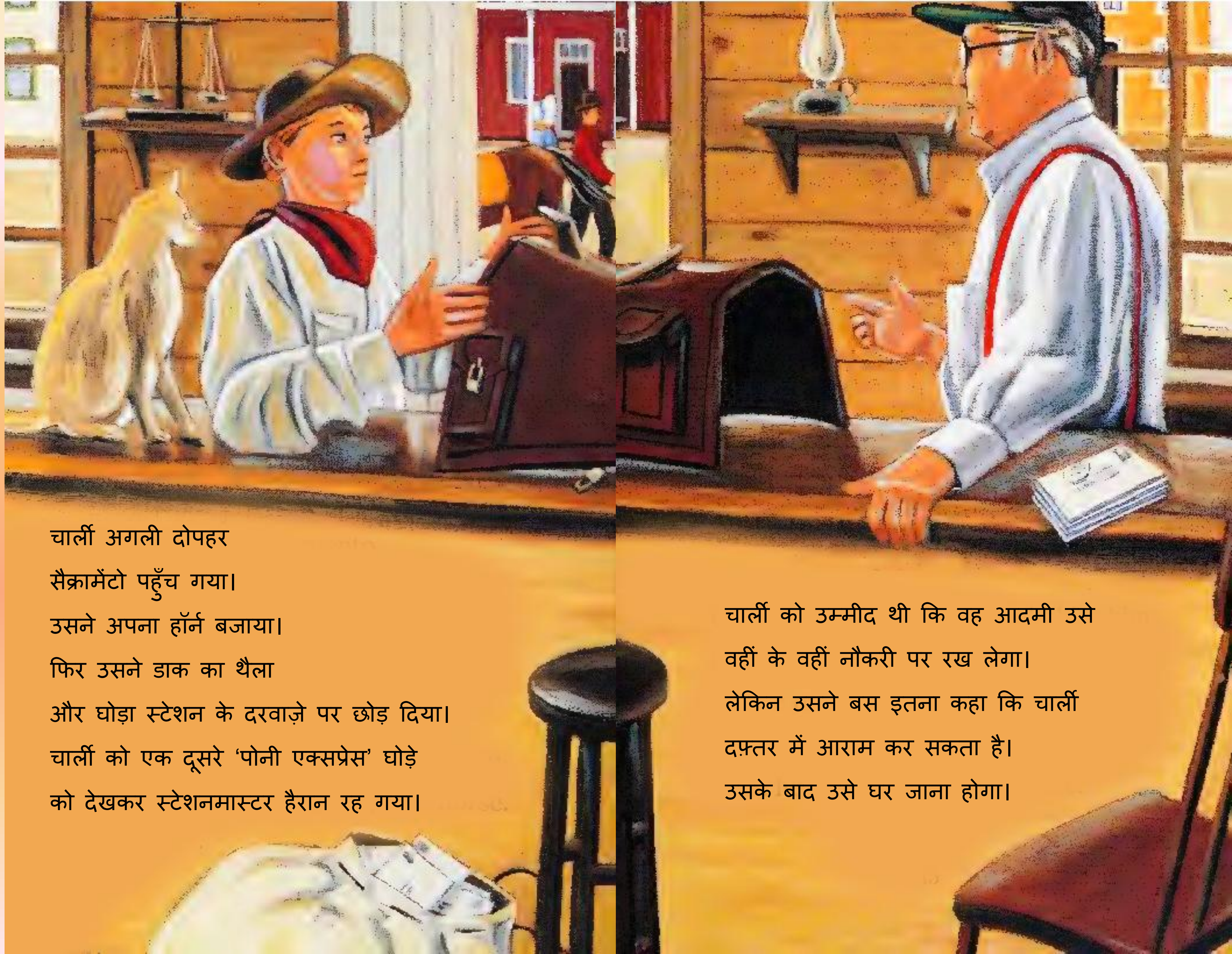

चार्ली अगली दोपहर
सैक्रामेंटो पहुँच गया।
उसने अपना हॉर्न बजाया।
फिर उसने डाक का थैला
और घोड़ा स्टेशन के दरवाज़े पर छोड़ दिया।
चार्ली को एक दूसरे 'पोनी एक्सप्रेस' घोड़े
को देखकर स्टेशनमास्टर हैरान रह गया।

चार्ली को उम्मीद थी कि वह आदमी उसे
वहीं के वहीं नौकरी पर रख लेगा।
लेकिन उसने बस इतना कहा कि चार्ली
दफ़्तर में आराम कर सकता है।
उसके बाद उसे घर जाना होगा।

अगली सुबह,
कुछ आवाज़ों ने चार्ली को जगा दिया।
स्टेशन पर मौजूद लोग आपस में बातें कर रहे थे।
उन्होंने कहा कि चार्ली ने खुद को साबित कर दिया है।
वह 'पोनी एक्सप्रेस' पर घुड़सवारी करने के लिए
काफ़ी काबिल है।
क्या वह यह नौकरी करना चाहता है?
चार्ली यह नौकरी किसी भी चीज़ से ज़्यादा चाहता था!
उसी दिन, स्टेशन पर चार्ली ने शपथ ली।
चार्ली ने वादा किया कि वह कभी भी
लड़ाई-झगड़ा नहीं करेगा, शराब नहीं पिएगा
और न ही गाली-गलौज करेगा।
और सबसे कम उम्र के उस 'पोनी एक्सप्रेस'
राइडर ने यह भी वादा किया कि वह हमेशा
डाक को सही समय पर पहुँचाएगा।

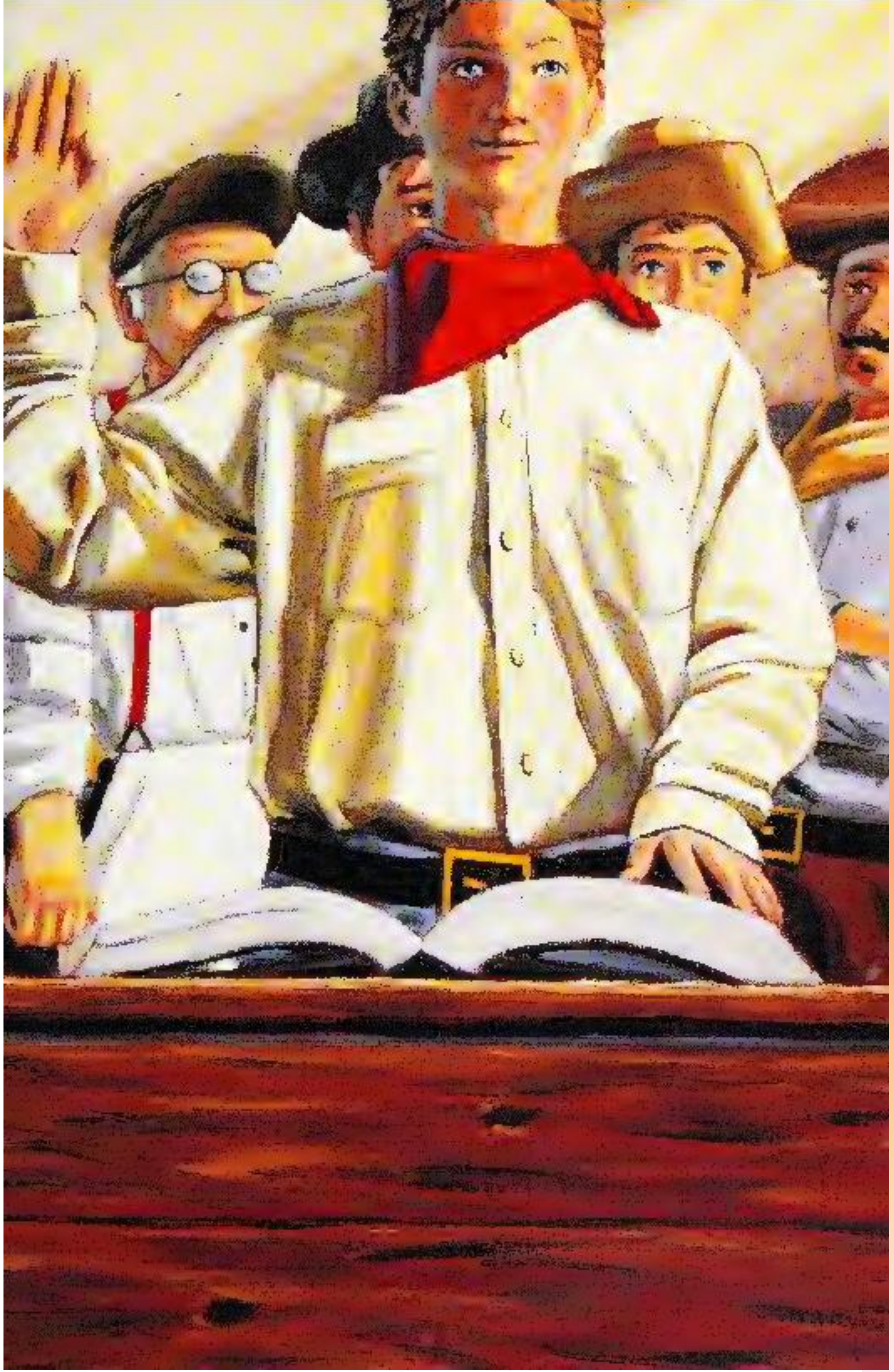

## उपसंहार

चार्ली ने और पाँच महीने तक डाक पहुँचाने का काम किया। 18 अक्टूबर, 1861 को पहला टेलीग्राफ़ संदेश भेजा गया। टेलीग्राफ़ संदेश तारों के ज़रिए पूरे देश में पहुँचते थे। हर संदेश पलक झपकते ही पहुँच जाता था। आठ दिन बाद, 'पोनी एक्सप्रेस' बंद हो गई।

चार्ली ने घोड़ों की सवारी करते हुए रोमांचक कारनामे करना जारी रखा। उसने बफ़ेलो बिल के 'वाइल्ड वेस्ट शो' के साथ पूरी दुनिया की यात्रा की। उसने टेडी रूज़वेल्ट के लिए घोड़ों को साधा, जो बाद में अमेरिका के राष्ट्रपति बने। उसने एक 'टेक्सास रेंजर' के तौर पर अमेरिका की सीमाओं की रक्षा की। फिर भी, वह हमेशा 'पोनी एक्सप्रेस' के घुड़सवार के तौर पर बिताए अपने दिनों को बहुत संजोकर रखता था।

1931 में, ब्रोंको चार्ली ने डाक पहुँचाने के लिए अपनी आखिरी सवारी की। तब तक, घोड़ों की जगह कारों ने ले ली थी। कुछ लोग हवाई जहाज़ से सफ़र करते थे। फिर भी, चार्ली न्यूयॉर्क शहर से सैन फ़्रांसिस्को तक घोड़े पर सवार होकर जाना चाहता था। वह बर्फ़, बारिश और रेत के तूफ़ानों के बीच हर दिन 30 मील की सवारी करता था। इस यात्रा में सात महीने और 23 दिन लगे। 81 साल की उम्र में, चार्ली अकेला ऐसा इंसान था जिसने घोड़े पर सवार होकर पूरे देश को पार किया था।

ब्रोंको चार्ली को 'पोनी एक्सप्रेस' और अपनी आखिरी डाक यात्रा की कहानियाँ सुनाकर सुनने वालों को रोमांचित करना पसंद था। उसे अच्छी कहानियाँ गढ़ना आता था। कभी-कभी वह एक बार कहानी सुनाते समय तथ्यों को थोड़ा बदल देता था। 1934 में, उसकी कई कहानियाँ एक किताब में छपीं।

ब्रोंको चार्ली की मृत्यु 105 साल की उम्र में हुई; वह पोनी एक्सप्रेस का सबसे ज़्यादा समय तक जीवित रहने वाला घुड़सवार था। कई साल बाद, उसकी पर-भतीजी को वह असली कहानी पता चली कि वह पोनी एक्सप्रेस का सबसे कम उम्र का घुड़सवार कैसे बना था। वह कहानी आज भी ज़िंदा है।